परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देना

आशीष रायचूर

केवल निःशुल्क वितरण के लिए
ऑल पीपल्स चर्च एण्ड वर्ल्ड आउटरीच, बैंगलोर, भारत द्वारा निर्मित और वितरित।
वर्तमान संस्करण: 2024

संपर्क जानकारी
All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email**: bookrequest@apcwo.org**
Website: **apcwo.org**

जब तक, अन्य रूप से संकेत न दिया गया हो, धर्मशास्त्र के सभी संदर्भ पवित्र बाइबल द बाइबल सोसायटी ऑफ इंडिया(BSI) द्वारा प्रकाशित, पुराने संस्करण से अनुमति सहित लिए गए हैं। सर्वाधिकार आरक्षित हैं। आर्थिक साझेदारी

आर्थिक साझेदारी
इस पुस्तक का निःशुल्क वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों की आर्थिक सहायता के कारण संभव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क प्रकाशन के माध्यम से आशीष पाई है, तो हम आपको ऑल पीपल्स चर्च के निःशुल्क प्रकाशनों के मुद्रण और वितरण में सहायता हेतु आर्थिक रूप से योगदान देने हेतु आमंत्रित करते हैं। कृपया **apcwo.org/give** पर जाइए या अपना योगदान कैसे करें, यह देखने हेतु इस पुस्तक के पीछे "ऑल पीपल्स चर्च के साथ प्रतिभागिता" पृष्ठ को देखीए। धन्यवाद!

निःशुल्क संसाधन और संबंधित वेबसाइटें
उपदेश: apcwo.org/sermons। **पुस्तकें:** apcwo.org/books। **चर्च ऐप:** apcwo.org/app
बाइबल कॉलेज: apcbiblecollege.org। **ई-लर्निंग:** apcbiblecollege.org/elearn
परामर्श सेवा: chrysalislife.org । **संगीत:** apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिप: pamfi.org। **एपीसी वर्ल्ड मिशन्स:** apcworldmissions.org

(Hindi – Giving Birth to the Purposes of God)

परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देना

विषयसूची

परिचय

1. "मरियम चमत्कार" से सबक 1
2. आप में संचित 8
3. प्रार्थना के द्वारा जन्म देना 13
4. बोला गया वचन 17
5. परिश्रमपूर्ण कार्य 20

परिचय

बाइबल यह प्रकट करती है कि जब परमेश्वर पृथ्वी पर अपने उद्देश्यों को प्रकट करना चाहता था, तब ऐसा समय भी रहा है जब परमेश्वर ने अपने स्वर्गदूतों का उपयोग किया है। किन्तु अधिकांश समय, वह मानवीय पात्रों के द्वारा उन्हें प्रकट करता है। इसका अर्थ यह है कि उसके उद्देश्य पृथ्वी पर आपके और मेरे जैसे लोगों के द्वारा जारी किए जाते हैं।

परमेश्वर के साथ चलते हुए, आप उसकी योजनाओं और उद्देश्यों को जानेंगे जिन्हें वह आपके द्वारा पृथ्वी पर जारी करना चाहता है। इन में से कुछ अत्यंत महत्वपूर्ण हो सकते हैं—जैसे कुंवारी द्वारा परमेश्वर के पुत्र का जन्म, और अन्य कुछ जो इतने महत्वपूर्ण न हों—ऐसे किसी दूर के देहात में, जिसके बारे में किसी ने नहीं सुना है, नर्सरी पाठशाला शुरू करना। फिर भी, यह प्रत्येक परमेश्वर का कार्य है जिसे पृथ्वी पर जारी किया जा रहा है।

इस पुस्तक में पृथ्वी पर परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देने पर कुछ बहुमूल्य अंतर्दृष्टियां सम्मिलित हैं। अतः, आपके जीवन द्वारा परमेश्वर के कार्यों को जारी करना आरंभ कीजिए।

परमेश्वर आपको आशीष दे!

आशीष रायचूर

1
“मरियम चमत्कार” से सबक

यशायाह 7:14
इस कारण प्रभु आप ही तुम को एक चिह्न देगा। सुनो, एक कुमारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी।

जब आप “मरियम चमत्कार” पर विचार करते हैं, यहां पृथ्वी पर परमेश्वर के कार्य को जारी करने के बारे में कुछ अंतर्दृष्टि है।

नियुक्त समय में पृथ्वी पर प्रकट किया

इस संसार में परमेश्वर के पुत्र के जन्म के बारे में पहले ही अदन की वाटिका में भविष्यवाणी की गई थी। *“और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूंगा; वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा”* (उत्पत्ति 3:15)। यशायाह जैसे भविष्यवक्ताओं ने और अन्य लोगों ने उसके आगमन के बारे में भविष्यवाणी की थी। फिर भी, ऐसा प्रतीत होता था कि परमेश्वर को उद्धारकर्ता को संसार में भेजने की जल्दी नहीं है। भविष्यवाणी के करीब 4000 सालों बाद, *“परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ”* (गलातियों 4:4)। परमेश्वर हमेशा नियुक्त समय में पृथ्वी पर अपने कार्य को जारी करता है। वह प्रत्येक कार्य जो परमेश्वर आपके द्वारा जारी करना चाहता है केवल नियुक्त समय में ही जारी करेगा।

साधारण मनुष्यों के द्वारा जारी

जब परमेश्वर अपने पुत्र को इस संसार में भेजना चाहता था परमेश्वर ने एक जवान यहूदी स्त्री को चुना, मरियम नाम कुंवारी को। यह सोचना अद्‌भुत है कि सबसे महत्वपूर्ण कार्य जो परमेश्वर करने वाला था—जगत के उद्धारकर्ता को भेजने का कार्य—एक जवान कुंवारी को सौंपा गया था। परमेश्वर ने कैसा खतरा मोल लिया था! मरियम के गर्भ में जिस बालक ने गर्भधारण किया था उसे यदि कुछ हो जाता, तो क्या होता? क्या होता यदि मरियम को उस शिशु का गर्भपात करने के लिए कहा जाता? क्या होता यदि उसका गर्भपात हो जाता? क्या होता यदि उस पर पथराव करके मार डाला जाता—ऐसी घटना जो इतिहास में उस समय के दौरान बिल्कुल सम्भव थी? तब जगत के उद्धारकर्ता का क्या हुआ होता? मानवजाति का क्या हुआ होता? फिर भी, विफलता की सारी सम्भावनाओं के बाद भी परमेश्वर ने यह सबसे महान कार्य एक युवा कुंवारी को सौंप दिया। यदि परमेश्वर ऐसा कर सकता है तो निश्चित रूप से, वह दूसरा कोई भी कार्य आपके और मेरे जैसे लोगों को सौंप सकता है—बहुसंख्यक लोगों को सुसमाचार सुनाना, बीमारों को चंगा करना, बंदियों को आज़ाद करना, राष्ट्रों को चंगा करना आदि। परमेश्वर सर्व सामान्य लोगों को अपना कार्य सौंपने से नहीं डरता। वस्तुतः, परमेश्वर ने सामान्य लोगों के द्वारा अपने कार्य को इस पृथ्वी पर जारी करने का चुनाव किया है।

बिना किसी अशुद्धता के—सिर्फ आत्मा द्वारा जन्मा

मरियम के गर्भ में परमेश्वर के पुत्र का गर्भधारण एक अलौकिक कार्य था; ऐसा कार्य जो केवल पवित्र आत्मा के द्वारा था। हालांकि गर्भधारण मानवीय गर्भ में हुआ, यह आश्चर्यकर्म के द्वारा हुआ। गर्भधारण के दौरान कोई मानव तत्व इसमें शामिल नहीं हुआ, *"स्वर्गदूत ने उसको उत्तर दिया, पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ्य*

तुझ पर छाया करेगी; इसलिये वह पवित्र जो उत्पन्न होने वाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा" (लूका 1:35)। हमारे द्वारा परमेश्वर जो प्रत्येक कार्य जारी करना चाहता है वह उसके आत्मा द्वारा जन्मा होना चाहिए। हालांकि वह हमारी स्वाभाविक योग्यता और बल के द्वारा जारी किया जाएगा, वह आत्मा से जन्मा होना चाहिए। *"क्योंकि जो शरीर से जन्मा (धारण किया गया) है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा (धारण किया गया) है, वह आत्मा है"* (यूहन्ना 3:6)। हम हमारे अनन्य रूप से मानव तर्क, कल्पना, या नयाचार के द्वारा कार्य का निर्माण कर यह अपेक्षा नहीं कर सकते कि वह परमेश्वर का वास्तविक कार्य हो, चाहे वह कितना ही आत्मिक क्यों न प्रतीत हो। यदि कार्य पवित्र आत्मा से जन्मा नहीं है, तो वह शरीर का कार्य होगा चाहे वह कितना ही धर्मी क्यों न दिखाई दे। परमेश्वर शरीर के कार्य को अभिषेक नहीं करेगा (निर्गमन 30:32)।

लज्जा का कारण हो सकता है

मरियम के लिए यह कितने आदर की बात हो सकती है कि संसार में उद्धारकर्ता का जन्म हो इसलिए वह मानव पात्र बन सकी! फिर भी, उसे कितनी लज्जाजनक स्थिति में डाला गया। वह एक अविवाहित स्त्री थी जो गर्भवती हो गई। जी हां, वह स्वयं परमेश्वर के पुत्र को गर्भ में धारण कर रही थी, परंतु क्या उसके परिवार ने और उसके मित्रों ने उसके स्पष्टीकरण को स्वीकार किया? जब उसने उन्हें यह समझाया कि वह पवित्र आत्मा के कार्य के द्वारा गर्भवती हुई है, तब क्या उन्होंने उस पर विश्वास किया? परमेश्वर द्वारा मरियम को ऐसी शर्मनाक परिस्थिति में क्यों डालना पड़ा जब वह उसके द्वारा परमेश्वर के पुत्र को "जन्म देना" चाहता था?

इसमें हमारे लिए एक शिक्षा है। प्रायः, जब हम हमें परमेश्वर द्वारा सौंपे गए कार्य को करना जारी रखते हैं, तब वह कार्य शर्म या लज्जा

का कारण हो सकता है। परमेश्वर हम में और हमारे द्वारा क्या कर रहा है उसे सभी नहीं समझ पाएंगे। उसका कार्य करने के लिए हमें तुच्छ समझा जा सकता है, और हमारा इन्कार किया जा सकता है। प्रायः, परमेश्वर हमें इसमें से होकर गुज़रने देता है ताकि "देह" मर सके। ताकि हम घटें, और परमेश्वर का पुत्र बढ़ सके। हम प्रभु यीशु मसीह की गवाही और हमारे द्वारा वह जो कार्य कर रहा है उससे लज्जित न होना सीखते हैं।

परमेश्वर का अलौकिक कार्य प्रायः सामान्य, स्वाभाविक प्रक्रियाओं द्वारा जारी किया जाता है। हालांकि बालक मरियम के गर्भ में अलौकिक रूप से आया, फिर भी उसे समय के पूरे होने तक अपने गर्भ में धारण करना पड़ा। परमेश्वर ने पूरी प्रक्रिया को—गर्भधारण गर्भावस्था, और प्रसव—को एक आश्चर्यकर्म क्यों नहीं बनाया? यदि बालक ने पहले दिन गर्भधारण किया होता और दूसरे दिन बालक के रूप में जन्म ले लिया होता, तो क्या यह एक बड़ा आश्चर्यकर्म न होता? मरियम को पूरे समय तक उस बालक को अपने गर्भ में धारण करने की सामान्य, स्वाभाविक प्रक्रिया में से क्यों जाना पड़ा? यहां पर महत्वपूर्ण (शिक्षा) सबक यह है कि, अक्सर परमेश्वर का अलौकिक कार्य पृथ्वी पर सामान्य स्वाभाविक प्रक्रियाओं द्वारा कार्यान्वित किया जाता है। उदाहरणार्थ, परमेश्वर ने आपको एक मज़बूत स्थानीय कलीसिया का निर्माण करने के लिए बुलाया होगा। यह ऐसा कार्य हो सकता है जो वह आपके द्वारा जारी करना चाहता है। उसने आपको इस क्षेत्र में अभिषेक किया होगा और वरदान दिए होंगे। फिर भी, आपको स्थानीय कलीसिया का निर्माण करने हेतु, परिश्रम करने, सिखाने, प्रचार करने, देखभाल करने, योजना बनाने, और संगठन करने की सामान्य प्रक्रिया में से गुज़रना होगा। केवल आपके सामान्य स्वाभाविक प्रयास के द्वारा परमेश्वर का अलौकिक कार्य जारी होगा।

दूसरा उदाहरण ईश्वरीय प्रावधान में होगा। परमेश्वर के लोग होने

के नाते, हम मानते हैं कि परमेश्वर हमारी सभी आवश्यकताओं को पूरा करेगा। हम परमेश्वर के अलौकिक प्रावधान में विश्वास करते हैं। जबकि, हम यह समझने में असफल हो सकते हैं कि, कई क्षेत्रों में, परमेश्वर का अलौकिक प्रावधान हमारे अपने हाथों के काम के माध्यम से हमारे जीवन में आएगा। हमें काम करना पड़ सकता है और फिर भी, जो प्रावधान हमें प्राप्त होगा वह अलौकिक ही होगा। उदाहरण के लिए, यह वास्तविकता कि आपके पास नौकरी का होना एक चमत्कार हो सकता है! आपके काम के माध्यम से आपको जो प्रावधान मिलता है वह अधिक अलौकिक है!

बंद दरवाज़ों का सामना करना पड़ सकता है

बाइबल हमें बताती है कि मरियम *"और वह अपना पहिलौठा पुत्र जनी और उसे कपड़े में लपेटकर चरनी में रखा; क्योंकि उनके लिये सराय में जगह न थी"* (लूका 2:7)। हम निश्चित नहीं जानते कि बेथलहम में कितनी सरायें थीं। हम कल्पना कर सकते हैं कि मरियम और यूसुफ कई सरायों के पास रुके होंगे और फिर भी उन्हें कमरा नहीं मिल पा रहा था। शायद एकमात्र सराय जिसमें वे गए थे, वहां खाली कमरे नहीं थे, और इसलिए सराय के मालिक ने उन्हें एक चरनी में भेजा। क्या इस विश्व का परमेश्वर अपने बेटे के जन्म के लिए अलौकिक रूप से कम से कम एक कमरा आरक्षित नहीं कर सकता था? क्या आप उन विचारों की कल्पना कर सकते हैं जो मरियम के मन में उमड़ रहे होंगे? उसने सोचा होगा, "मुझे विश्वास है कि परमेश्वर हमारे लिए एक कमरा रखेगा। आख़िरकार, जो बच्चा मेरे गर्भ में है वह परमेश्वर का पुत्र है। मुझे विश्वास है कि सराय में हमारे लिए जगह होगी।" फिर भी, यह कितना निराशाजनक था कि हर दरवाज़ा जो उन्होंने खटखटाया तब तक बंद ही रहा था जब तक कि वे उस स्थान पर नहीं पहुंच गए जहां परमेश्वर चाहता था कि बालक का जन्म हो। इसी प्रकार, हमारे जीवन में, जैसे-जैसे हम पृथ्वी पर परमेश्वर के कार्य को आगे बढ़ाते हैं,

यह संभव है कि कई बार हमें बंद दरवाज़ों का सामना करना पड़े। इसका मतलब यह नहीं कि हम जो काम कर रहे हैं वह सच्चा नहीं है। बंद दरवाज़ों का सीधा सा मतलब यह है कि हमें आगे बढ़ते रहना है, दूसरे दरवाज़ों पर तब तक दस्तक देते रहना है जब तक हम उस स्थान पर नहीं पहुंच जाते जहां परमेश्वर चाहता है कि काम जारी हो जाए।

ऐसे कई लोग हैं जिन्होनें आत्मा में परमेश्वर के वास्तविक कार्यों की कल्पना की हो और, जो सचमुच पवित्र आत्मा के हैं। हालांकि, जब तक वे उस स्थान पर नहीं पहुंच जाते जहां परमेश्वर उन्हें रखना चाहता है, तब तक वे प्रसव नहीं कर सकते—जन्म नहीं दे सकते। उन्हें प्रसव के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना पड़ सकता है, हो सकता है कि प्रसव के लिए तब तक "कोई जगह" न मिले जब तक कि वे उस स्थान पर न पहुंच जाएं जहां परमेश्वर चाहते हैं कि वे हों। इससे पहले कि परमेश्वर के उद्देश्य हमारे द्वारा जन्म लें, हमें सही स्थान पर होना चाहिए।

रक्षा एवं पोषण करना होगा

एक बालक के रूप में, यीशु को उसी तरह बड़ा होना था जैसे कोई दूसरा बालक होता है (लूका 2:40)। जिस दिन यीशु का जन्म हुआ उस दिन से उसने खाना और कपड़े पहनना शुरू नहीं किया था! बल्कि, मरियम को उसकी देखभाल और पालन-पोषण करना था और उसी तरह उसका पालन-पोषण करना था जैसे दूसरी कोई भी मां करती है। वास्तव में, जब यीशु शिशु था, तब यूसुफ और मरियम को बेथलहम छोड़कर मिस्र देश जाकर उसके प्राण की रक्षा करनी पड़ी क्योंकि राजा हेरोदेस बच्चे को मारने की कोशिश में था (मत्ती 2:12-16)। मरियम और यूसुफ ने यह सोचकर बच्चे को परमेश्वर के भरोसे नहीं छोड़ा कि, "आखिरकार, यह तो परमेश्वर का

पुत्र है। अवश्य ही, वह अपना पेट भर सकता है, अपनी रक्षा खुद कर सकता है और अपनी देखभाल कर सकता है।" मरियम पर न केवल परमेश्वर के पुत्र को जन्म देने की जिम्मेदारी थी, बल्कि उसका पालन-पोषण, देखभाल और उसकी रक्षा करने की जिम्मेदारी भी थी। इसी प्रकार, हम उस कार्य के प्रबंधक या भण्डारी हैं जिसे परमेश्वर हमारे द्वारा जन्म देता है। हमारे द्वारा जन्म लेने वाले प्रत्येक कार्य का पोषण, देखभाल और सुरक्षा की जानी चाहिए। हम शैतान या बुरे उद्देश्य रखने वाले लोगों को उस कार्य को नष्ट करने की अनुमति नहीं दे सकते जो परमेश्वर ने हमारे माध्यम से शुरू किया है।

निम्नलिखित अध्यायों में हम उन चार तत्वों पर विचार करेंगे जो परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देने की प्रक्रिया में शामिल हैं।

2
आप में संचित

परमेश्वर अपने उद्देश्यों को उस जमा या जो संचित है, उसमें से जारी करता है जो हमारे अंदर है।

हमारे अंदर जो संचित है यह निर्धारित करता है कि हमारे द्वारा क्या जन्म लेता है

मत्ती 12:33-37

33"यदि पेड़ को अच्छा कहो, तो उसके फल को भी अच्छा कहो, या पेड़ को निकम्मा कहो, तो उसके फल को भी निकम्मा कहो; क्योंकि पेड़ अपने फल ही से पहचाना जाता है।
34हे सांप के बच्चो, तुम बुरे होकर कैसे अच्छी बातें कह सकते हो? क्योंकि जो मन में भरा है, वही मुंह पर आता है।
35भला मनुष्य मन के भले भण्डार से भली बातें निकालता है, और बुरा मनुष्य बुरे भण्डार से बुरी बातें निकालता है।
36और मैं तुम से कहता हूं कि जो जो निकम्मी बातें मनुष्य कहेंगे, न्याय के दिन वे हर एक उस बात का लेखा देंगे।
37क्योंकि तू अपनी बातों के कारण निर्दोष, और अपनी बातों ही के कारण दोषी ठहराया जाएगा।

"भला मनुष्य मन के भले भण्डार से भली बातें निकालता है" (मत्ती 12:35)। हमारे अंदर से जो उत्पन्न होता है वह हमारे अंदर मौजूद खज़ाने या जमा पर निर्भर करता है। यदि हमारे हृदय में अच्छा भण्डार है, तो हम अच्छी बातों को जन्म देंगे। यदि हमारे हृदय में बुराई है तो हम बुरी बातों को जन्म देंगे। हमारे अंदर जो संचित है वह हमारे द्वारा जन्म लेने वाली वस्तु के स्वभाव को निर्धारित करता है।

मत्ती 7:15-20
15"झूठे भविष्यवक्ताओं से सावधान रहो, जो भेड़ों के भेस में तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु अन्तर में वे फाड़नेवाले भेड़िए हैं।
16उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे। क्या लोग झाड़ियों से अंगूर, या ऊँटकटारों से अंजीर तोड़ते हैं?
17इसी प्रकार हर एक अच्छा पेड़ अच्छा फल लाता है और निकम्मा पेड़ बुरा फल लाता है।
18अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं ला सकता, और न निकम्मा पेड़ अच्छा फल ला सकता है।
19जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में डाला जाता है।
20इस प्रकार उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे।

यहां, यीशु फरीसियों के साथ वार्तालाप करता है। फरीसियों ने मान लिया कि यदि उनके पास "अच्छे फल" होंगे, तो पेड़ अवश्य ही अच्छा हो जाएगा। लेकिन यीशु ने बताया कि इसके बिल्कुल विपरीत बात सच है। यदि पेड़ अच्छा होगा तभी उसका फल अच्छा होगा। पेड़ का गुण या स्वभाव उस पर लगने वाले फल को निर्धारित करता है। हमारे अंदर जो संचित है वह इस बात को निश्चित करेगा कि हम क्या फल लाएंगे। यह तय करेगा कि हम अपने जीवन में किस बात को जन्म देंगे। हमारे अंदर जो है वही यह निर्धारित करेगा कि हमारे जीवन में क्या जारी होता है। इसी प्रकार, परमेश्वर हमारे अंदर संचित जमा के साथ मिलकर अपने कार्यों को हमारे द्वारा शुरू करता है। इसलिए, हमने जो पहले से ही अपने अंदर संचित कर रखा है और जो हम अपने अंदर संचित करना जारी रखते हैं, वह अत्यंत महत्वपूर्ण है।

संचय कैसे होता है

परमेश्वर हमारे जीवन में चीजों को संचित करता है

यूहन्ना 3:27
यूहन्ना ने उत्तर दिया, "जब तक मनुष्य को स्वर्ग से न दिया जाय, तब तक वह कुछ नहीं पा सकता।"

परमेश्वर हमारे जीवन में बातों को संचित कर सकता है। हमारे पास जो जमा या अच्छा खजाना है, वह खुद परमेश्वर ने हमारे अंदर रखा है। हमारे पास जो कुछ है उसका स्रोत वह है। यदि परमेश्वर चाहे, तो वह हमारे जीवन में कुछ बातों को संचय कर सकता है—वरदान, अभिषेक, और अन्य योग्यताएं जो वर्तमान में हमारे पास नहीं हैं।

दूसरे लोग हमारे जीवन में बातों का संचय कर सकते हैं

नीतिवचन 27:17
जैसे लोहा लोहे को चमका देता है, वैसे ही मनुष्य का मुख अपने मित्र की संगति से चमकदार हो जाता है।

जिन लोगों से हम सम्बंधित होते हैं वे हमारे अंदर अच्छी या बुरी बातें संचित करते हैं। हम व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने मूसा और यहोशू के बीच रिश्ता स्थापित किया (व्यवस्थाविवरण 1:38)। परमेश्वर ने मूसा से कहा कि वह जाकर यहोशू को एक अगुवे के रूप में खड़ा करे (गिनती 27:18-23)। मूसा का अभिषेक यहोशू को दिया गया। बुद्धि की आत्मा यहोशू में थी क्योंकि मूसा ने उस पर हाथ रखा था (व्यवस्थाविवरण 34:9)। कुछ बातें एक व्यक्ति में, दूसरे व्यक्ति द्वारा संचित की जाती हैं। अन्य लोगों के द्वारा हमारे जीवन में अच्छी बातों का संचय हो सकता है। अतः, हम जानबूझकर उस तरह के लोगों को चुन सकते हैं जिनके साथ हम समय बिताते हैं और उन्हें अपने जीवन में अच्छी बातों को संचित करने की अनुमति दे सकते हैं।

हम अपने जीवन में स्वयं ही बातों को संचित करते हैं

नीतिवचन 4:23
सबसे अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है।

हम यह तय कर सकते हैं कि हम अपने जीवन में क्या जमा करते

हैं। हम जानबूझकर परमेश्वर के वचन का अध्ययन , कुछ लोगों के साथ समय बिताकर और कुछ क्षेत्रों में प्रशिक्षण हममें संचय करने के उद्देश्य से करते हैं। जब हमारे अंदर एक अच्छा खजाना होता है, तो हम स्वयं को उस स्थान पर स्थापित करते हैं या उस स्थान पर रखते हैं, जहां हमारे द्वारा अच्छी बातें जन्म ले सकती हैं।

जब हम उस कार्य को समझना शुरू करते हैं जिसे परमेश्वर हमारे माध्यम से जारी करना चाहता है, हमें उन्हीं बातों को अपने जीवन में जमा करना चाहिए, और इससे परमेश्वर के कार्य को जन्म देने में सहायता मिलेगी।

हम इसे कई रीतियों से कर सकते हैं —

- हमारे जीवन में,
- उन लोगों के साथ समय व्यतीत करके जो हमें ये प्रदान कर सकते हैं, या
- आवश्यक प्रशिक्षण प्राप्त करके।

यह बातें केवल तब ही सामने आती है जब हम इसका संचय करते है। हम ऐसे ही किसी भी बात को सामने नहीं ला सकते जो पहले से ही हमारे अंदर जमा न हुई हो। उदाहरण के लिए, यदि आप एक पास्टर हैं और आपने एक नई कलीसिया स्थापित की है, तो परमेश्वर की इच्छा है कि कलीसिया बढ़े, संख्या में बढ़ौत्तरी हो, वह दृढ़ बने, और उस प्रकार की कलीसिया बने जैसा परमेश्वर चाहता है। अब, आपको यह निर्धारित करने की आवश्यकता है कि ऐसा होने के लिए आपको किस प्रकार के संचय की आवश्यकता होगी। आपको परमेश्वर के वचन के बड़े संचय की, परमेश्वर के अभिषेक की अधिकता का संचय की, कलीसिया की अगुवाई करने हेतु और सही निर्णय लेने की सामर्थ पाने हेतु अधिक बुद्धि एवं समझ , उत्तम कलीसियाई संगठन और

प्रबंधन कौशल के अधिकता की आवश्यकता हो सकती है। अतः, आपको वचन का अध्ययन करना होगा, अभिषेक में और बढ़ौत्तरी पाना होगा, उत्तम कलीसियाई प्रबंधन के बारे में सीखना होगा, और इन सभी बातों को अपने अंदर संचित करना होगा ताकि कलीसिया से सम्बंधित बातों का जन्म हो सके।

3
प्रार्थना के द्वारा जन्म देना

हम प्रार्थना के माध्यम से अपने जीवन में परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देते हैं। प्रार्थना वह प्रसव प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम परमेश्वर की बातों को पृथ्वी पर अस्तित्व में लाते हैं।

प्रार्थना में, आपको परमेश्वर के उद्देश्यों की समझ प्राप्त होती है

1 कुरिन्थियों 2:9,10
9 परन्तु जैसा लिखा है,
"जो बातें आंख ने नहीं देखीं और कान ने नहीं सुनीं,
और जो बातें मनुष्य के चित में नहीं चढ़ीं,
वे ही हैं जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिये तैयार की हैं।"
10 परन्तु परमेश्वर ने उनको अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रकट किया, क्योंकि आत्मा सब बातें, वरन् परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जांचता है।

1 कुरिन्थियों 14:2
क्योंकि जो अन्य भाषा में बातें करता है वह मनुष्यों से नहीं परन्तु परमेश्वर से बातें करता है; इसलिये कि उसकी बातें कोई नहीं समझता, क्योंकि वह भेद की बातें आत्मा में होकर बोलता है।

मानव जाति के लिए परमेश्वर की सामान्य योजनाओं और उद्देश्यों के अलावा, परमेश्वर ने हममें से प्रत्येक व्यक्ति के लिए कुछ बातों की योजना बनाई है और उन्हें हममें से प्रत्येक के लिए तैयार किया है। *"क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गए, जिन्हें परमेश्वर ने पहले से ही तैयार किया, कि हम उन पर चलें"* (इफिसियों 2:10)। हममें से कई लोगों के लिए, हमारे जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य स्पष्ट नहीं होंगे और

लगभग एक "रहस्य" जैसे प्रतीत हो सकते हैं। हालांकि, परमेश्वर का आत्मा परमेश्वर के मन को जानता है। पवित्र आत्मा परमेश्वर की सभी गहरी बातों को जानता है और परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों से पूरी तरह अवगत है क्योंकि वह खुद परमेश्वर है। पवित्र आत्मा हमारे सामने परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों को प्रकट करेगा। प्रार्थना में अक्सर ऐसा होता है।

जब आप प्रार्थना करते हैं, तब आप परमेश्वर के उद्देश्यों को अस्तित्व में लाने के लिए प्रार्थना करते हैं

भिन्न(अन्य) भाषाओं में प्रार्थना करने (या आत्मा में प्रार्थना करने) का एक सामर्थी लाभ यह है कि हम "भेद की बातों" के साथ प्रार्थना कर रहे हैं। जब हम आत्मा में प्रार्थना कर रहे होते हैं, तो हम वास्तव में अपने जीवन के लिए परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों के लिए प्रार्थना कर रहे होते हैं, जो उस समय एक भेद अर्थात रहस्य या हमारे लिए छिपी हुई बातें हो सकती है।

प्रार्थना में, परमेश्वर हम पर उन बातों को प्रकट करता है जिन्हें वह हमारे द्वारा जन्म देना चाहता है। जब हम प्रार्थना करते हैं, गर्भधारण होता है, और परमेश्वर के उद्देश्य हमारी आत्माओं में समाहित हो जाते हैं। जब हम आत्मा में प्रार्थना करना जारी रखते हैं, हम आत्मा के क्षेत्र में परमेश्वर के उद्देश्यों को आकार देते हैं। जन्म या प्रसव अभी तक नहीं हुआ होगा। लेकिन गर्भधारण के समय से लेकर प्रसव तक, गर्भधारण के विकास की, आंतरिक विकास की और अदृश्य क्षेत्र में विकास की अवधि होती है—और जब हम आत्मा में प्रार्थना करते हैं तो यही होता है। हम कोई प्रकट बदलाव नहीं देख सकते, परंतु आत्मिक क्षेत्र में, परमेश्वर के उद्देश्य आकार ले रहे हैं और तैयार हो रहे हैं, और हम उस समय के निकट आ रहे होते हैं, जब उन्हें पृथ्वी पर जारी किया जाना है। अतः, जब हमें कोई विचार या दर्शन मिलता है, और

जब परमेश्वर हम पर उन बातों को प्रकट करता है जिन्हें वह हमारे द्वारा जारी करना चाहता है, तो हमें उनके लिए प्रार्थना करने हेतु समय बिताने की आवश्यकता है। उसके उद्देश्य सम्पूर्ण होकर सही समय पर,पृथ्वी पर जन्म लेंगे।

प्रार्थना आपकी इच्छा को परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप बनाती है

इब्रानियों 5:7-9
7 यीशु ने अपनी देह में रहने के दिनों में ऊंचे शब्द से पुकार-पुकारकर और आंसू बहा-बहाकर उससे जो उसको मृत्यु से बचा सकता था, प्रार्थनाएं और विनती की, और भक्ति के कारण उसकी सुनी गई।
8पुत्र होने पर भी उसने दुःख उठा-उठाकर आज्ञा माननी सीखी,
9और सिद्ध बनकर, अपने सब आज्ञा माननेवालों के लिये सदाकाल के उद्धार का कारण हो गया।

मत्ती 26:38,39,42
38तब उसने उनसे कहा, "मेरा जी बहुत उदास है, यहां तक कि मेरा प्राण निकला जा रहा है। तुम यहीं ठहरो और मेरे साथ जागते रहो।"
39फिर वह थोड़ा और आगे बढ़कर मुंह के बल गिरा, और यह प्रार्थना की, "हे मेरे पिता, यदि हो सके तो यह कटोरा मुझ से टल जाए, तौभी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो।"
42फिर उसने दूसरी बार जाकर यह प्रार्थना की, "हे मेरे पिता, यदि यह मेरे पीए बिना नहीं हट सकता तो तेरी इच्छा पूरी हो।"

हमारे मनों के लिए इस सच्चाई को समझना कठिन है कि परमेश्वर के पुत्र को आज्ञाकारिता सीखनी पड़ी। फिर भी, उपरोक्त पदों से हमें पता चलता है कि पुत्र के मन में पिता के लिए "ईश्वरीय भय" या "ईश्वरीय आदर" था। गतसमनी के बगीचे में, जब यीशु उनकी मृत्यु द्वारा दिए जाने वाले बलिदान का सामना कर रहे थे, जिसमें वह मरने वाले थे, तो प्रार्थना और विनती के पीड़ादायक समय के माध्यम से, ऊंचे शब्द से पुकार पुकारकर, वह एक ऐसे स्थान पर आया जहां वह पिता की

इच्छा को "हां" कह सकता था। यह प्रार्थना के उस गहन समय के द्वारा था कि उसकी इच्छा पूरी तरह से पिता की इच्छा के अनुरूप हो गई, यहां तक कि वह मृत्यु तक आज्ञाकारी रहा। इसी तरह, हमारे जीवन में, कई बार, हम प्रार्थना के समय में प्रवेश कर सकते हैं जहां हमारी इच्छा पूरी तरह से उसकी इच्छा को पूरा करने के लिए समर्पित नहीं होती। किन्तु, जब हम पिता की उपस्थिति में प्रार्थना के समय से होकर जाते हैं, तो अक्सर, हम अपनी इच्छा को पूरी तरह से उसकी इच्छा के साथ जोड़ देते हैं। हम अपने प्रार्थना के समय से यह कहते हुए आते हैं, "हे प्रभु, आपकी इच्छा पूरी हो।"

इस प्रकार, प्रार्थना न केवल अदृश्य क्षेत्र में परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देने, आकार देने और तैयार करने म सहायता करती है, जब तक कि यह स्वाभाविक रूप से जारी किए जाने के लिए तैयार न हो जाए, बल्कि प्रार्थना हमें अपनी इच्छा को पिता की इच्छा के अनुरूप बनाने में भी मदद करती है ताकि हम उसके उद्देश्यों को पृथ्वी कायान्वित करने के लिए तैयार हों।

4
बोला गया वचन

जिन शब्दों को हम बोलते हैं वे ऐसे साधन होते हैं जिनके माध्यम से हम पृथ्वी पर परमेश्वर की इच्छा और उद्देश्यों को कार्यान्वित करते हैं। हमारे शब्द न केवल हमारे वर्तमान बल्कि हमारे भविष्य को भी प्रभावित करते और आकार देते हैं।

ऐसे शब्दों को जारी करें जो आपके जीवन को परमेश्वर के उद्देश्यों से प्रज्वलित करे

याकूब 3:6
जीभ भी एक आग है; जीभ हमारे अंगों में अधर्म का एक लोक है, और सारी देह पर कलंक लगाती है, और जीवन-गति में आग लगा देती है, और नरक कुण्ड की आग से जलती रहती है।

जीभ को "आग" कहा गया है जो इस ओर इंगित करती है कि जीभ का बहुत प्रभाव होता है। यह पद विशेष रूप से एक "बुरी" जीभ के प्रभाव के बारे में बात कर रहा है—एक ऐसी जीभ जो बुरी बातें बोलती है।

जिस प्रकार बुरी जीभ अधर्म का एक "लोक" है, उसी प्रकार अच्छी जीभ आशीष का "लोक" है (याकूब 3:6)। एक बुरी जीभ सारे शरीर को अशुद्ध करती है, जबकि एक अच्छी जीभ पूरे शरीर को आशीष प्रदान करती है। महत्वपूर्ण संदेश यह है कि हमारी जीभ हमारे पूरे अस्तित्व को प्रभावित करती है। हमारी जीभ हमारे अस्तित्व की दिशा को प्रभावित करती है। हमारा जीवन हमारी जीभ द्वारा निकलने

वाली "आग पर निर्भर होती है।" यह उन शब्दों से प्रभावित हो रही है जिन्हें हम बोलते हैं।

बुरी जीभ नरक की आग से प्रेरित है। लेकिन एक जीभ जो आशीष और अभिषेक का "लोक" है, उसे परमेश्वर, उसके वचन और उसके आत्मा द्वारा "प्रज्वलित किया जाता" है। यह जीभ पूरे शरीर को आशीष प्रदान करती है। यह ऐसी जीभ है जो हमारे जीवन को उन आशीषों से प्रज्वलित करेगी जो परमेश्वर ने हमारे लिए रखी हैं। यह ऐसी जीभ है जो पृथ्वी पर परमेश्वर के उद्देश्यों को जारी करेगी।

जीभ या तो अधर्म के संसार से हो सकती है या आशीष के संसार से हो सकती है। हम जो शब्द बोलते हैं उसके द्वारा हम परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देते हैं। हमें ऐसे शब्दों को जारी करने की आवश्यकता है जो परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों के साथ हमारे अस्तित्व को "प्रज्वलित कर दे"। हमें परमेश्वर की बातों को बोलकर अस्तित्व में लाने की ज़रूरत है।

परमेश्वर के वचन को बोलने के द्वारा आप अपने संसार को आकार दें

इब्रानियों 11:3
विश्वास ही से हम जान जाते हैं कि सारी सृष्टि की रचना परमेश्वर के वचन के द्वारा हुई है। पर यह नहीं कि जो कुछ देखने में आता है, वह देखी हुई वस्तुओं से बना हो।

स्वाभाविक आत्मिक से बना। दृश्य अदृश्य से बाहर आ गया। अदृश्य, या आत्मिक सामग्री, जिसका उपयोग प्राकृतिक को जन्म देने के लिए किया गया था वह परमेश्वर का बोला हुआ वचन था। इस प्रकार, यह परमेश्वर का वचन है जो प्राकृतिक क्षेत्र में चीजों को आकार देता है, बनाता है, जन्म देता है, रचता है और अस्तित्व में लाता है।

परमेश्वर ने हमें अपने वचन को अपने जीवन में बोलने और जैसा हम चाहते हैं वैसा तय करने का अधिकार और क्षमता दी है।

अपने जीवन में परमेश्वर के स्वप्नों, योजनाओं और उद्देश्यों को बोलें।

5
परिश्रमपूर्ण कार्य

नीतिवचन 10:4
जो काम में ढिलाई करता है,
वह निर्धन हो जाता है,
परन्तु कामकाजी लोग अपने हाथों के द्वारा
धनी होते हैं।

नीतिवचन 13:4
आलसी का प्राण लालसा तो करता है,
और उसको कुछ नहीं मिलता,
परन्तु कामकाजी हृष्ट पुष्ट हो जाते हैं।

1 कुरिन्थियों 15:10
परन्तु मैं जो कुछ भी हूं, परमेश्वर के अनुग्रह से हूं। उसका अनुग्रह जो मुझ पर हुआ, वह व्यर्थ नहीं हुआ; परन्तु मैं ने उन सबसे बढ़कर परिश्रम भी किया: तौभी यह मेरी ओर से नहीं हुआ परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से जो मुझ पर था।

स्वप्न तब तक वास्तविक नहीं बनते जब तक कोई अपने सपनों को खून, पसीना और आँसुओं से जोड़ने को तैयार न हो! परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देने के लिए हमारी ओर से परिश्रमपूर्वक काम करना होगा।

"जो आंसू बहाते हुए बोते हैं, वे जयजयकार करते हुए लवने पाएंगे" (भजन संहिता 126:5)। जब तक हम पहले "आंसू बहाते हुए नहीं बोएंगे" तब तक हम "जयजयकार करते हुए लवने नहीं पाएंगे।" हमारे पास परमेश्वर द्वारा दिया गया कोई दर्शन या स्वप्न हो सकता है, लेकिन इसे साकार करने के लिए हमें कुछ कठोर संघर्ष और समर्पित

प्रयास की आवश्यकता होगी। जब हम एक ईंट को दूसरी पर रखते हैं, विरोध की हवा अचानक बह सकती है और कुछ ईंटों को नीचे धकेल सकती है। लेकिन हमें उन्हें उठाना है, फिर से निर्माण करना है और आगे बढ़ते रहना है। परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देने के लिए कुछ परिश्रमपूर्ण कार्य करने की आवश्यकता होगी।

परमेश्वर ने हमें सिर्फ स्वप्न देखने वाले नहीं बल्कि सेवक बनने के लिए बुलाया है जो उनके राज्य के लिए काम करते हैं। हमें सेवकाई का काम करने के लिए बुलाया गया है, न कि केवल सेवा के काम के बारे में स्वप्न देखने के लिए। सभी कठिनाइयों और चुनौतियों के बावजूद काम करते रहें और स्वप्न पूरा हो जाएगा।

मेरा मानना है कि कुछ ऐसे उद्देश्य हैं जिन्हें परमेश्वर हममें से प्रत्येक के द्वारा जन्म देना चाहता है। परमेश्वर के पास यह कहते हुए न जाएं, "परमेश्वर, मैंने बड़े स्वप्न देखे, लेकिन मैंने कुछ भी प्राप्त नहीं किया।" हमें यह जानते हुए स्वर्ग जाने की आवश्यकता है कि हमने उस प्रत्येक बात को जन्म दिया है जो परमेश्वर चाहता है कि हमारे द्वारा पृथ्वी पर जन्म ले।

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपसे प्रेम करता है?

दो हज़ार साल पहले, परमेश्वर इस संसार में मनुष्य बनकर आया। उसका नाम यीशु है। उसने पूर्ण रूप से निष्पाप जीवन बिताया। यीशु देहधारी परमेश्वर था, इसलिए जो कुछ उसने कहा और किया, उसके द्वारा उसने परमेश्वर को हम पर प्रगट किया। जिन वचनों को उसने कहा, वे परमेश्वर के वचन थे। जिन कामों को उसने किया, परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने इस पृथ्वी पर कई सामर्थ के काम किए। उसने बीमारों को और पीड़ितों को चंगा किया। उसने अन्धों की आंखें खोलीं, बहरे कानों को खोल दिया, लंगड़े चलने लगे। उसने हर प्रकार के रोगों और बीमारियों को चंगा किया। उसने आश्चर्यजनक रूप से कुछ ही रोटियां बहुगुणित कर भूखों को खिलायी, आंधी को थामा और कई आश्चर्यकर्म किए।

ये सारे कार्य हमें दिखाते हैं कि यीशु अच्छा परमेश्वर है, जो चाहता है कि उसके लोग भले, चंगे स्वस्थ और खुश रहें। परमेश्वर लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना चाहता है।

फिर परमेश्वर ने क्यों मनुष्य बनने का और हमारे संसार में आने का निर्णय लिया? यीशु क्यों आया?

हम सबने पाप किया है और ऐसे कामों को किया है जो हमें उत्पन्न करने वाले परमेश्वर के सम्मुख अस्वीकारणीय हैं। पाप के परिणाम हैं। पाप परमेश्वर और हमारे बीच एक ऊंची दीवार है जिसे हम लांघ नहीं सकते। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उस परमेश्वर को जानने और उसके साथ, जिसने हमें बनाया है, अर्थपूर्ण रिश्ता बनाए रखने से रोकता है। इसलिए, हम में से कई लोग अन्य बातों का सहारा लेकर इस खालीपन को भरने की कोशिश करते हैं।

हमारे पापों का अन्य परिणाम है। परमेश्वर से अनंतकाल तक अलगाव। परमेश्वर की अदालत में, पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से दूर नर्क में अनंतकाल का अलगाव है।

परंतु सुसमाचार यह है कि हम पाप से मुक्ति पाकर परमेश्वर से फिर मेल कर सकते हैं। बाइबल कहती है, ***"क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु***

***परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है"* (रोमियों 6:23)**। यीशु ने सम्पूर्ण जगत के पापों का दण्ड सहा, वह क्रूस पर मर गया। फिर तीसरे दिन वह जी उठा, और उसने कइयों को खुद को जीवित दिखाया और वह स्वर्ग पर चढ़ गया।

परमेश्वर प्रेमी और दयालु है। वह नहीं चाहता कि हममें से कोई व्यक्ति नर्क में नाश हो। और इसलिए वह सम्पूर्ण मानवजाति को पापों और उसके परिणामों से मुक्ति का मार्ग दिखाने के लिए आया। वह पापियों को बचाने के लिए आया—आपके और मेरे जैसे लोगों को पाप और अनंतकाल की मृत्यु से बचाने के लिए।

पापों की यह विनामूल्य क्षमा पाने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है—जो कुछ प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर किया उसे ग्रहण करना और उस पर सम्पूर्ण हृदय से विश्वास करना।

"जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी" (प्रेरितों के काम 10:43)।

"कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा "(रोमियों 10:9)|

यदि आप प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे, तो आप भी पापों की क्षमा और शुद्धता पा सकते हैं।

प्रभु यीशु मसीह में और जो कुछ उसने आपके लिए क्रूस पर किया उस पर विश्वास करने हेतु निर्णय लेने में आपकी सहायता करने के लिए यहां एक सरल प्रार्थना दी गई है। इस प्रार्थना की सहायता से आप जो कुछ यीशु ने आपके लिए किया, उसे ग्रहण कर सकते हैं और क्षमा और पापों से शुद्धी पा सकते हैं। यह प्रार्थना मात्र मार्गदर्शन के लिए है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं।

प्रिय प्रभु यीशु, जो कुछ आपने क्रूस पर किया उसे मैंने आज समझा है। आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे लिए बहुमूल्य लोहू बहाया और मेरे पापों का

दण्ड चुकाया, ताकि मुझे क्षमा मिल सके। बाइबल बताती है कि जो कोई आप पर विश्वास करेगा वह अपने पापों से क्षमा पाएगा।

आज, मैं आप में विश्वास करने का और क्रूस पर मेरे लिए मरकर और फिर मरे हुओं में से जी उठकर जो कुछ आपने मेरे लिए किया उसे ग्रहण करने का निर्णय लेता हूं। मैं जानता हूं कि मैं अपने भले कामों से खुद को बचा नहीं सकता, न ही और कोई मनुष्य मुझे बचा सकता है। मैं अपने पापों की क्षमा मोल नहीं ले सकता।

आज, मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूं और अपने मुंह से कहता हूं कि आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे पापों का दण्ड चुकता किया। आप फिर मरे हुओं में से जी उठे, और आपमें विश्वास करने के द्वारा, मैं पापों की क्षमा और मेरे पापों से शुद्धता पा सकता हूं।

धन्यवाद यीशु। आपसे प्रेम करने, आपको अधिकाई से जानने और आपके प्रति विश्वासयोग्य रहने में मेरी सहायता कीजिए।

आमीन।

ऑल पीपल्स चर्च के विषय में

ऑल पीपल्स चर्च का दर्शन बैंगलोर शहर में नमक और ज्योति, और भारत देश और संसार के राष्ट्रों के लिए एक आवाज़ बनना है।

ऑल पीपल्स चर्च यीशु से **प्रेम रखने वाली, वचन पर केंद्रित, आत्मा से परिपूर्ण** पारिवारिक कलीसिया, एक प्रशिक्षण संस्थान, मिशन आधारित संसार में सुसमाचार करने वाली कलीसिया है।

- एक **पारिवारिक कलीसिया** के रूप में, हम मसीह केंद्रित संगति में एक समुदाय के रूप में एक साथ बढ़ते हैं, परमेश्वर की मण्डली के रूप में प्रेम में एक दूसरे की देखभाल और सेवा करते हैं।
- एक **सुसज्जित करने वाले केंद्र** के रूप में, हम प्रत्येक विश्वासी को विजयी रूप से जीने, मसीह की समानता में परिपक्व होने और उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सामर्थी बनाते हैं और सुसज्जित करते हैं।
- एक **मिशन के आधार** के रूप में, हम अपने शहर, राष्ट्र और राष्ट्रों को परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा की सामर्थ के अलौकिक प्रदर्शनों के माध्यम से यीशु मसीह के पूर्ण सुसमाचार के साथ आशीष देने के लिए सार्थक सेवकाई में संलग्न हैं।
- एक **विश्व सुसमाचार प्रचारक** के रूप में, हम ईश्वरीय अगुवों और आत्मा से भरी कलीसियाओं का पोषण करके स्थानीय और विश्व स्तर पर सेवा करते हैं जो परमेश्वर के राज्य के लिए उनके क्षेत्रों को प्रभावित कर सकते हैं।

एपीसी में हम परमेश्वर का सम्पूर्ण वचन बिना किसी समझोते के साथ पवित्र आत्मा के अभिषेक और प्रकाशन के साथ प्रस्तुत करने के प्रति समर्पित हैं। हमारा विश्वास है कि अच्छा संगीत, रचनात्मक प्रस्तुति, बुद्धिमानीपूर्ण पक्ष समर्थन, समकालीन सेवकाई की तकनीकें, आधुनिक तंत्रविज्ञान आदि पवित्र आत्मा के चिन्हों, चमत्कारों, आश्चर्यकर्मों और पवित्र आत्मा के वरदानों के साथ वचन की घोषणा करने की परमेश्वर द्वारा नियुक्त पद्धति का स्थान नहीं ले सकते (1 कुरिन्थियों 2:4,5; इब्रानियों 2:3,4)। हमारा विषय यीशु है, हमारी विषयवस्तु वचन है, हमारी पद्धति पवित्र आत्मा की सामर्थ है, हमारा आवेश लोग हैं, और हमारा लक्ष्य मसीह सदृश्य परिपक्वता है।

हमारा मुख्यालय बैंगलोर में है, परंतु ऑल पीपल्स चर्च की भारत की अन्य कई स्थानों में शाखाएं हैं। ऑल पीपल्स चर्च की वर्तमान सूची और सम्पर्क सूचना के लिए कृपया हमारे वेबसाईट को भेंट दें**: apcwo.org/locations** या इस पते पर ई-मेल भेजें : **contact@apcwo.org**

निःशुल्क प्रकाशन

A Church in Revival
A Real Place Called Heaven
A Time for Every Purpose
Ancient Landmarks
Baptism in the Holy Spirit
Being Spiritually Minded and Earthly Wise
Biblical Attitude Towards Work
Breaking Personal and Generational Bondages
Change
Code of Honor
Divine Favor
Divine Order in the Citywide Church
Don't Compromise Your Calling
Don't Lose Hope
Equipping the Saints
Foundations (Track 1)
Fulfilling God's Purpose for Your Life
Gifts of the Holy Spirit
Giving Birth to the Purposes of God
God Is a Good God
God's Word—The Miracle Seed
How to Help Your Pastor
Integrity
Kingdom Builders
Laying the Axe to the Root
Living Life Without Strife
Marriage and Family
Ministering Healing and Deliverance
Offenses—Don't Take Them
Open Heavens
Our Redemption
Receiving God's Guidance
Revivals, Visitations and Moves of God
Shhh! No Gossip!
Speak Your Faith
The Conquest of the Mind
The Father's Love
The House of God
The Kingdom of God
The Mighty Name of Jesus
The Night Seasons of Life
The Power of Commitment
The Presence of God
The Redemptive Heart of God
The Refiner's Fire
The Spirit of Wisdom, Revelation and Power
The Wonderful Benefits of Praying in Tongues
Timeless Principles for the Workplace
Understanding the Prophetic
Water Baptism
We Are Different
Who We Are in Christ
Women in the Workplace
Work—Its Original Design

नई पुस्तकें नियमित रूप से प्रकाशित की जाती हैं। PDF, आडियो तथा अन्य फॉर्मेट में विनामूल्य ए. पी. सी. पुस्तकों को डाऊन लोड करने हेतु कृपया **apcwo.org/books** को भेंट दें। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। वैसे ही, विनामूल्य ऑडियो और वीडियो संदेशों, संदेश की टिप्पणियों, और अन्य कई संसाधनों के लिए हमारे वेबसाईट **apcwo.org/sermons** को भेंट दें।

क्रिसलिस काउंसलिंग

क्रिसलिस काउंसलिंग लोगों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने और उन्हें दूर करने में मदद करने हेतु व्यक्तिगत परामर्श प्रदान करता है। क्रिसलिस काउंसलिंग व्यावसायिक और प्रशिक्षित और अनुभवी मसीही सलाहकारों की एक टीम है।

हमारी सेवाएं सभी आयु वर्ग के लोगों लिए हैं, और जीवन में होने वाली चुनौतियों की विस्तृत श्रृंखला का समाधान करती है।

किशोरों
व्यक्तिगत समायोजन
सम्बंधपरक चुनौतियां
शिक्षा में कम सफलता पाने वाले
कार्य सम्बंधित मुद्दे
परिवार/दम्पत्ति: विवाह पूर्व, वैवाहिक
आत्मिक समस्याएं
माता-पिता / बच्चे / भाई-बहन / सहकर्मी
व्यवहार सम्बंधी विकार
व्यक्तित्व विकार
मनोवैज्ञानिक/भावनात्मक समस्याएं
तनाव / आघात
शराब / नशीली दवाओं का गलत इस्तेमाल
जिंदगी की सीख

क्रिसलिस काउंसलिंग सेवाओं के लिए शुल्क सस्ती और सुलभ है।

हमारे प्रशिक्षित सलाहकारों में से किसी एक के साथ मुलाकात तय करने के लिए

वेबसाइट: **chrysalislife.org**
फ़ोन: +91-80-25452617 टोल फ्री (भारत के अंतर्गत) 1-800-300-00998
ईमेल: **counselor@chrysalislife.org**

क्रिसलिस काउंसलिंग ऑल पीपल्स चर्च एँड वर्ल्ड आउटरीच की सेवकाई है।

ऑल पीपल्स चर्च के साथ साझेदारी करें

ऑल पीपल्स चर्च स्थानीय कलीसिया के रूप में सम्पूर्ण भारत में सुसमाचार प्रचार करते हुए, विशेषकर उत्तर भारत में, उसकी सीमाओं से परे सेवा करता है। उसका विशेष लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (आ) जवानों को सेवकाई के लिए सुसज्जित करना और (इ) मसीह की देह की उन्नति करना है। जवानों के लिए कई प्रशिक्षण सम्मेलन, 'मसीही अगुवों के लिए सभाओं' का सम्पूर्ण वर्ष भर आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकों की कई हजारों प्रतियां अंग्रेजी में और अन्य कई भारतीय भाषाओं में विनामूल्य वितरीत की जाती हैं, उसके पीछे उद्देश्य यह है कि विश्वासियों को वचन और आत्मा में उन्नति प्रदान करें।

हम आपको निमंत्रण देते हैं कि एक समय का दान भेजकर या मासिक आर्थिक दान भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ साझेदारी करें। सम्पूर्ण राष्ट्र में इस का कार्य के लिए जो भी रकम आप भेज सकते हैं, उसके लिए हम आपके प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

आप अपने दान चेक / बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से "ऑल पीपल्स चर्च," बैंगलोर के नाम पर हमारे कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा हमारे बैंक खाते के विवरण का उपयोग कर आप अपना योगदान सीधे बैंक में डाल सकते हैं।

खाता नाम: All Peoples Church
खाता संख्या: 50200068829058
IFSC कोड: HDFC0004367
बैंक: HDFC Bank, 7M/308 80 Ft Road, HRBR Layout, Kalyan Nagar, Bengaluru-560043, Karnataka

कृपया ध्यान दें: *ऑल पीपल्स चर्च केवल भारतीय नागरिकों के बैंक योगदान ही स्वीकार कर सकता है। यदि आप चाहते हैं तो, अपना दान भेजते समय, स्पष्ट रूप से लिखें कि आप एपीसी सेवकाई के किस क्षेत्र के लिए दान भेजना चाहते हैं। अतिरिक्त जानकारी के लिए कृपया इस स्थान को भेंट दें* ***apcwo.org/give***

उसी तरह, हमारे लिए और हमारी सेवकाई के लिए जब भी हो सके, प्रार्थना करना न भूलें।

धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे!

DOWNLOAD THE FREE APP!

Search for
"All Peoples Church Bangalore"
in the App or Google play stores.

Available on the App Store

ANDROID APP ON Google play

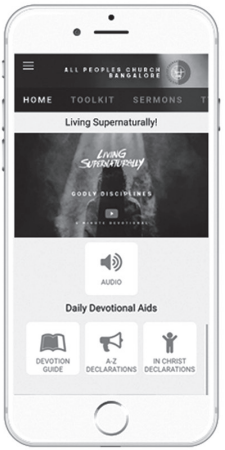

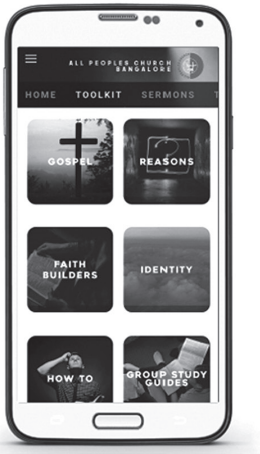

A daily 5-minute video devotional.
A daily Bible reading and prayer guide.
5-minute Sermon summary.
Toolkit with Scriptures on various topics to build faith and information to share the Gospel.
Resources with sermons, sermon notes, TV programs, books, music and more.

IF YOU LOVE IT, TELL OTHERS ABOUT IT!

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज

apcbiblecollege.org

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज एंड वर्ल्ड आउटरीच भारत के बैंगलोर में आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त, सक्रिय सेवकाई में सहभागी प्रशिक्षण और सिद्धांत की दृष्टि से सही एवं परमेश्वर के वचन के बौद्धिक दृष्टि से प्रेरणादायक अध्ययन के साथ पवित्र आत्मा की अलौकिक सामर्थ में सेवकाई के लिए तैयारी प्रदान करता है। हम सेवकाई के लिए सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में विश्वास करते हैं और ईश्वरीय चरित्र, परमेश्वर के वचन में गहरी बुनियाद, और चिन्ह, चमत्कारों और आश्चर्यकर्मों पर ज़ोर देते हैं—सब कुछ प्रभु के साथ निकट रिश्ते से प्रवाहित होता हुआ।

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज (एपीसी-बीसी)में सही शिक्षा के अतिरिक्त, हम प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के प्रेम, पवित्र आत्मा का अभिषेक और उपस्थिति और परमेश्वर के अलौकिक कार्य पर बल देते हैं। कई युवा स्त्री और पुरुषों ने प्रशिक्षण पाया है और उनके जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने हेतु उन्हें बाहर भेजा गया है।

निम्नलिखित तीन पदवियां दी जाती हैं :

- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में एक वर्षीय प्रमाणपत्र (C.Th)
- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में दो वर्षीय प्रमाणपत्र (Dip.Th)
- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में तीन वर्षीय प्रमाणपत्र (B.Th)

हर सप्ताह के दिन, **सोमवार से शुक्रवार तक भारतीय समय के अनुसार सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक (UTC+5:30)** कक्षाएं ली जाती हैं।

- **ऑन-कैम्पस**: कैम्पस में व्यक्तिगत कक्षाओं में भाग लीजिए
- **ऑनलाइन**: ऑनलाइन लाइव व्याखान में भाग लीजिए
- **ई-लर्निंग**: ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से स्वयं की सुविधानुसार सीखनें के लिए **apcbiblecollege.org/elearn**

ऑनलाइन आवेदन हेतु, और कॉलेज, पाठ्यक्रम, पात्रता मानदंड, शिक्षण

जब परमेश्वर पृथ्वी पर अपने उद्देश्यों को प्रकट करना चाहता था, तब ऐसा समय रहा है जब परमेश्वर अपने स्वर्गदूतों का उपयोग करता है, किन्तु अधिकांश समय, वह मानवीय पात्रों के द्वारा उन्हें प्रकट करता है। इसका अर्थ यह है कि उसके उद्देश्य पृथ्वी पर आपके और मेरे जैसे लोगों के द्वारा जारी किए जाते हैं।

परमेश्वर के साथ चलते हुए, आप उसकी योजनाओं और उद्देश्यों को जानेंगे जिन्हें वह आपके द्वारा पृथ्वी पर जारी करना चाहता है। इन में से कुछ अत्यंत महत्वपूर्ण हो सकते हैं—जैसे कुंवारी द्वारा परमेश्वर के पुत्र का जन्म, और अन्य कुछ जो इतने महत्वपूर्ण नहीं होंगे—ऐसे किसी दूर के देहात में, जिसके बारे में किसी ने नहीं सुना है, नर्सरी पाठशाला शुरू करना। फिर भी, यह प्रत्येक कार्य परमेश्वर का कार्य है जिसे पृथ्वी पर जारी किया जा रहा है।

इस पुस्तक में पृथ्वी पर परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देने पर कुछ बहुमूल्य अंतर्दृष्टियां शामिल हैं। अतः, आपके जीवन के द्वारा परमेश्वर के कामों को जारी करना शुरू करें।

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: contact@apcwo.org
Website: apcwo.org